डिजिटल दुनिया और डिजिटल हिंदी: भारतीय समुदाय की निर्भरता

डॉ. अनवर खान मंसूरी, सहायक प्राध्यापक, पत्रकारिता विभाग,श्रीकृष्णा यूनिवर्सिटी, छतरपुर, मप्र, भारत
ईमेल:- anwarmediakhan@gmail.com

सारांश : उक्त अनुसंधान अध्ययन न्यू मीडिया और ऑनलाइन समुदाय पर संस्कृति के परिवर्तन के बीच संबंधों की सूक्ष्म जांच कर रहा है। न्यू मीडिया फैलाव का हमारे समाज के तकरीबन समस्त पहलुओं पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। साइबर स्पेस के युग में वर्तमान पीढ़ी संचार तकनीकों के एक सेट के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन का भरपूर लाभ उठा रहे हैं, जो कि अपनी उम्र से कही अधिक है। जनसंचार का विकसित यह नया स्वरूप नई संस्कृति को दिनोंदिन बदल रहा है। सुई से लेकर रेडियो और टेलीविज़न तक, संचार के नए माध्यमों ने हमेशा डिजिटल जाल में रोजमर्रा के जीवन में खुद को बुन लिया है। पिछले तीन दशकों में उद्योग और अनुसंधान प्रयोगशाला से घर तक कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के प्रवास ने इन प्रक्रियाओं को तेज किया है। नए इंटरेक्टिव मीडिया के साथ सह-अस्तित्व में है, जो न केवल वैष्विक सूचना बचत, वास्तविक समय डेटा हस्तांतरण और ऑनलाइन संचार की संभावनाओं को खोल रहा है, बल्कि इसके कई मानवशास्त्रीय, सौंदर्यशास्त्रीय, सांस्कृतिक निहितार्थ भी हैं। ये मीडिया नई सांस्कृतिक सामग्री और शिष्टाचार की स्थापना के साधन भी हैं और इन सामग्रियों को कैसे स्वीकार किया जाता है, इस पर दृष्टिकोण करते हैं। जिसका समकालीन जीवन शैली पर काफी प्रभाव पड़ता है। नई संस्कृति साइबर संस्कृति की एक व्यापक अवधारणा का एक अभिन्न अंग है, इसकी आवश्यक अवधारणाएं अन्तरक्रियाशीलता, विसर्जन और भागीदारी है। वर्तमान अध्ययन मीडिया निर्भरता सिद्धांत की सैद्धांतिक धारणा पर आधारित है कि कैसे व्यक्ति नई संस्कृति और नई संभावनाओं, भारतीय ऑनलाइन समुदाय पर नए मीडिया के प्रभाव को प्राप्त करने के लिए मीडिया पर निर्भर करते हैं।

कीवर्ड : न्यू मीडिया, नई संस्कृति, ऑनलाइन, समुदाय, साइबर, मीडिया निर्भरता, सिद्धांत।

प्रस्तावना

20वीं शताब्दी में इतिहास में जनसंचार के क्षेत्र में किसी भी अन्य अवधि की तुलना में संचार के नए रूपों के अभिसरण को देखा गया। ऑटोमोबाइल, बिजली, टेलीफोन और हवाई जहाज ने संसार को लोगों के लिए और अधिक सुलभ बना दिया और इस प्रक्रिया ने हमारे समाज को बदल दिया। जैसे ही संचार का एक नया रूप सामने आया है, तब दुनियाभर में इंटरकनेक्ट नेटवर्क की सुलभ प्रणाली जिसे इंटरनेट कहा जाता है, सार्वजनिक रूप से सुलभ है, आम लोगों को नए संचार रूपों के माध्यम से मनोरंजन और सूचना सामग्री की एक विस्तारित गुणवत्ता, सीमा और पसंद का आनंद मिलता है। इस नए रूपों संचार में शास्त्रीय जन मीडिया की तुलना में अधिक अवसर हैं। न्यू मीडिया के उन व्युत्पन्न लोगों में से एक बहुत ही खुला और सुलभ माध्यम है। नए माध्यम की जानकारी के लिए एक अकल्पनीय विकल्प खुला है। यदि लोग किसी विशेष पूर्वाग्रह को पसंद करते हैं, तो यह नए मीडिया पर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। जबकि न्यू मीडिया शास्त्रीय मीडिया या इतिहास के किसी भी अन्य रूप की तुलना में स्वतंत्र और अधिक सुलभ है। उपयोगकर्ता इसे किसी भी चीज से बचने के लिए मुकदमा कर सकते हैं जिससे वे असहमत

हो सकते हैं। दुनिया भर में सूचना के आदान-प्रदान और सामाजिक संपर्क के लिए न्यू मीडिया एक मुख्य धारा के माध्यम के रूप में उभरा है। बहुत से लोगों ने बहुत विविध जानकारी प्राप्त करने और संचार गतिविधियों का संचालन करने के लिए इसे दैनिक रूप से बदल दिया है। बड़ी संख्या में उपयोगकर्ता सूचना और मनोरंजन उपभोक्ता हैं और सूचना प्रदाता बनने के लिए कई अतिरिक्त हैं। अमूमन वर्तमान में अधिकांश नए मीडिया उपभोक्ता सामाजिक संपर्क के लिए उपयोग करते हैं। देशभर में लगभग 2.7 बिलियन लोग नए मीडिया का उपयोग करते हैं, जो कि दुनिया की आबादी का 39 प्रतिशत है। अधिकांश नए मीडिया उपयोगकर्ता दोस्तों, रिश्तेदारों, सहकर्मियों और उन लोगों से संपर्क रखने के लिए ऑनलाइन का प्रयोग करते हैं। ये ज्यादातर उन लोगों के साथ एक नया ऑनलाइन संबंध स्थापित करते है जिनसे वे कभी भी व्यक्तिगत रूप से नहीं मिले हैं, परंतु जिनके साथ आपका साझा हित है। अब उपयोगकर्ता एक-दूसरे के साथ ऑनलाइन गेम खेलते हैं, चौट रूम, चर्चा, मंचों, और मीटिंग रूम में सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं, सामाजिक और व्यावसायिक नेटवर्किंग साइटों पर जाते हैं, और विनिमय जानकारी और अधिग्रहण के लिए लोगों से मिलने के लिए डेटिंग और अन्य सामाजिक नेटवर्किंग साइटों पर जाते हैं। नई संस्कृति। न्यू मीडिया दुनिया भर के लाखों लोगों के साथ संवाद करने का तकनीकी उपकरण है। आधुनिक मीडिया के निर्माण में नया मीडिया एक प्रमुख भूमिका के रूप में उभर रहा है, और उनका प्रभाव स्थानीय, राष्ट्रीय सीमाओं से बहुत अधिक है। इसलिए, नए मीडिया के मानवीय दृष्टिकोण और व्यवहार पर इसके प्रभाव के बारे में बहुत अधिक चिंता है। न्यू मीडिया और नई संस्कृति भारतीय ऑनलाइन समुदाय की निर्भरता नए मीडिया प्लेटफार्मों के उद्भव ने ऑनलाइन के माध्यम से लोकप्रिय संस्कृति के उत्पादकों और उपभोक्ताओं के बीच संबंधों के पुनर्जागरण को जन्म दिया है।

भारतीय समुदाय: विद्वानों ने अपने अपने शब्दों में समुदाय को परिभाषित किया है। मसलन, लोग समान भौतिक स्थान साझा करते हैं, सभी प्रकार के साहचर्य और समर्थन साझा करने के लिए आमने-सामने बातचीत करते हैं (वेलमैन, 1999)। रिश्तेदारी नेटवर्क के एक समूह के रूप में समुदाय, जो एक सामान्य भौगोलिक क्षेत्र, इतिहास और एक मूल्य प्रणाली साझा करते हैं। संचार और संचार प्रौद्योगिकी जैसे कि ऑटोमोबाइल और टेलीफोन और परिवहन के क्षेत्र में प्रगति के कारण इतिहास के माध्यम से सामुदायिक सीमाओं का विस्तार हुआ है, जो लोगों को दूसरी दुनिया में लोगों के साथ संबंध बनाए रखने में सक्षम बनाता है। कई विद्वानों ने तर्क दिया है कि सामाजिक नेटवर्क की धारणा दोस्तों, परिजनों और साथी कर्मचारियों के साथ होती है जो जरूरी नहीं कि एक ही पड़ोस में रहते हैं। यह सामाजिक नेटवर्क दृष्टिकोण पर्यावरण के बजाय समुदाय के सदस्यों के बीच गतिविधियों और बातचीत पर जोर देने का आग्रह करता है। अन्य लोगों ने तर्क दिया है कि समुदाय का गठन उन व्यक्तिगत लोगों के साथ किया जा सकता है, जो समान जीवन जैसे नए जीवन साझा करते हैं। कई शोध अध्ययनों में पाया गया है कि समुदाय के सदस्य न केवल एक ही रुचि साझा करते हैं, बल्कि उस समुदाय से संबंधित भी हैं, जो एक भावना है कि सदस्य एक दूसरे और समूह के लिए मायने रखते हैं, और एक साझा विष्वास है कि सदस्यों की ज़रूरतें होंगी। सदस्यता, प्रभाव, आवश्यकताओं की पूर्ति, व्यापार और साझा भावनात्मक संबंध समुदाय के प्राथमिक तत्व हैं। समुदाय अध्ययन बताता है कि समुदाय के सदस्यों के बीच बातचीत, प्रभाव और आदान-प्रदान के सामाजिक गतिशील में एक समुदाय मौजूद है। इसलिए सदस्यों के बीच इन सामाजिक गतिविधियों के अवलोकन के आधार पर ऑनलाइन समुदाय का मूल्यांकन किया जाएगा। चाहे कोई भी सामाजिक गतिविधियाँ हों, और अगर वहाँ हैं, तो वे वास्तविक जीवन के समुदाय में कितने अलग या समान हैं।

निर्भरता का वैज्ञानिक सिद्धांत: मीडिया निर्भरता का अध्ययन प्रकृति में अपेक्षाकृत वैज्ञानिक है। मीडिया निर्भरता का सिद्धांत उपयोग और संतुष्टि के सिद्धांतों और एजेंडा सेटिंग के सिद्धांत पर आधारित है। उपयोग और संतुष्टि पहचानती है कि लोग मीडिया पर किस तरह से प्रयोग करते हैं और निर्भर करते हैं। व्यक्ति कई उद्देश्यों और कई कारणों से मीडिया का उपयोग करते हैं। सूचना,

मनोरंजन, सामाजिक संबंध, दूसरों को सीखना, उनके आसपास की कई चीजों को जानना और संस्कृति उनमें से कुछ ही हैं। निर्भरता सिद्धांत कहता है कि अधिक से अधिक व्यक्ति, समूह, समुदाय और जन इन आश्रितों की जरूरतों को पूरा करने के लिए मीडिया पर निर्भर हो गए हैं और मीडिया समुदायों और व्यक्तियों और जन के लिए अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगा। हमेशा मीडिया में व्यक्तियों और समुदायों पर बहुत अधिक प्रभाव और शक्ति होगी। यह मीडिया की निर्भरता और मीडिया के प्रभाव और प्रभाव के बीच एक सहसंबंध की भविष्यवाणी करता है। प्रत्येक व्यक्ति अलग-अलग तरीकों से मीडिया सामग्री का उपभोग करता है और प्रत्येक व्यक्ति अलग-अलग तरीकों से अपना प्रभाव डालता है। पिछले कई वर्षों में संचार विद्वानों ने विभिन्न तरीकों से मीडिया के प्रभावों को पाया है। मीडिया निर्भरता सिद्धांत ने सभी स्तरों पर व्यक्तियों, संस्थानों और मीडिया के बीच संबंधों को समझाया है। 20 वीं शताब्दी में देश में कई व्यक्तियों और नई पीढ़ी के लिए संचार के नए रूप दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गए हैं। यह परिवर्तन इन नई पीढ़ी पर नए मीडिया के प्रभाव और प्रभाव का अनुमान लगा रहा है, और ये नई पीढ़ी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नए मीडिया पर निर्भर है। एक मीडिया निर्भरता संबंध वह है, जिसमें व्यक्तियों द्वारा जरूरतों या लक्ष्यों की संतुष्टि को पूरा करने के लिए दूसरे के संसाधनों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। मीडिया की निर्भरता की मुख्य धारणा यह है कि समाज में व्यक्तियों को विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मीडिया सूचना संसाधनों पर निर्भर रहना पड़ता है। मीडिया निर्भरता संबंधों की तीव्रता लक्ष्यों को पूरा करने और प्राप्त करने में मीडिया की कथित सहायता पर निर्भर करती है। सिद्धांत की केंद्रीय धारणा यह है कि आधुनिक समाज में लोग अपने आसपास की दुनिया को समझने और समझने के लिए मीडिया पर निर्भर हैं। मीडिया निर्भरता सिद्धांत की मूल धारणा बताती है कि दर्शकों, मीडिया और समाज के बीच एक आपसी संबंध मौजूद है। जिसमें समाज और दर्शक मीडिया पर निर्भर करते हैं कि वे उन्हें जानकारी, मनोरंजन और संस्कृति प्रदान करें।

डिजिटल दुनिया और डिजिटल हिंदी पर समुदाय की निर्भरता: मीडिया डिपेंडेंसी सिद्धांत समूहों, व्यक्तियों, संगठनों, सामाजिक प्रणाली और मीडिया के बीच के रिश्ते को एक पारिस्थितिक और बहुस्तरीय दृष्टिकोण से समझाता है। इसमें कहा गया है कि एक आधुनिक समाज के लोग अपने रोजमर्रा के जीवन से संबंधित कई तरह के निर्णय लेने के लिए जरूरी सूचना प्राप्त करने के लिए जनसंचार पर निर्भर हो गए हैं। मीडिया निर्भरता सिद्धांत के मूल प्रस्तावों को एक साथ लाया जा सकता है और संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है। संज्ञानात्मक परिवर्तन जो निर्भरता सिद्धांत को बहु-गुना में समझाते हैं। यह इस विचार का अनुपालन करता है कि लोग अपने निर्णयों को निर्धारित करने वाली जानकारी के लिए इस पर भरोसा करते हैं। यह स्पष्ट रूप से व्यक्तियों को दिए गए विषय के बारे में कुछ दृष्टिकोण विकसित करने में मदद कर सकता है। मीडिया का स्नेहपूर्ण स्वरूप काफी विशिष्ट है। यह डर, चिंता और खुशी जैसी कई अलग-अलग भावनाएं पैदा कर सकता है। वही मीडिया व्यवहार परिवर्तन को भी बढ़ावा दे सकता है। जनसंचार माध्यमों में इन क्षमताओं का समावेश होता है और उसी के कारण समाज अपने सभी संसाधनों के लिए मीडिया पर निर्भर हो गया है जिसे मैं निर्णय लेने का आदेश देता हूं। ऑनलाइन समुदाय अरबों लोग चौट करने के लिए ऑनलाइन मिलते हैं। समान विचारधारा वाले लोगों को खोजने, कई मुद्दों पर बहस करने, वीडियो गेम खेलने, सहायता, ई-कॉमर्स की तलाश करने या दूसरों के साथ घूमने इत्यादि के लिए। ये ऑनलाइन समुदाय चैट-रूम, बुलेटिन बोर्ड, चर्चा समूहों में शामिल होने के लिए जाते हैं। वे मैसेजिंग टेक्स्ट का उपयोग करके अपना स्वयं का सामुदायिक समूह बनाते हैं और यह दुनिया के कुछ हिस्सों में भी लोकप्रियता हासिल कर रहा है।

नई पीढ़ी या डिजिटल दुनिया: ऑनलाइन समुदाय और नई संस्कृति की निर्भरता हम दूसरे मीडिया युग में हैं। औद्योगिकी और संस्कृति दोनों में क्रांति। जिसमें हमारी नई युवा पीढ़ी अक्सर मोहरा में होती है। सूचना युग में हममें से अधिकांश लोग अपने लैपटॉप या निजी कंप्यूटर

को मेल की जांच करने और समाचारों की सुर्खियां पढ़ने या इंटरनेट के माध्यम से दूसरों से जोड़ने के लिए चालू करते हैं। वर्तमान नई पीढ़ी या जिसे डिजिटल कहा जाता है। इंटरनेट पर पली-बढ़ी है और सूचना और मनोरंजन के लिए नए मीडिया में प्लग-इन और कनेक्टेड है। अधिकांश नई पीढ़ियों ने अपने कानों में प्लग किए गए आईपॉड के साथ निर्भर किया है, वे लगातार सोशल नेटवर्क साइटों का उपयोग और जांच कर रहे हैं और अपनी स्थिति को अपडेट कर रहे हैं। वे तुरंत मनोरंजन की मांग करते हैं। वे नियमित रूप से मीडिया सामग्री का उत्पादन और उपभोग करते हैं। मल्टी-टास्किंग डिजिटल की नई पीढ़ी अलग-अलग उद्देश्य के लिए नए मीडिया के साथ अधिक समय बिता रही है। सच्चाई है कि युवा लोगों द्वारा नए मीडिया का उपयोग पूरी तरह से नया नहीं है। वीडियो गेम को लंबे समय पहले पेश किया गया था जिसके कारण डिजिटल सामग्री विस्फोट हुआ। मीडिया में अभिसरण, व्यक्तिगत कंप्यूटरों की सस्ती और मोबाइल टेलीफोन सेटों में उन्नति, इंटरनेट का विस्तार और उच्च गति कनेक्शन उनकी बढ़ती जरूरतों के लिए मूल्य और नए मीडिया पर निर्भर हैं। अच्छी तरह से डिज़ाइन किए गए नए मीडिया में न केवल नई पीढ़ी को सीखने में मदद करने की असाधारण क्षमता है, बल्कि नई संस्कृति सीखने का एक सच्चा प्यार भी है। दुनिया भर में इंटरनेट संसाधनों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। इंटरनेट अब वैश्विक स्तर पर लगभग 2 बिलियन से अधिक लोगों द्वारा उपयोग किया जा रहा है। अपने स्पष्ट रूप से असीमित संसाधनों के साथ, नए मीडिया में विभिन्न प्रकार के लक्ष्यों को पूरा करने की क्षमता है। ब्याज, विनिमय विचार, वाणिज्यिक लेन-देन में संलग्न, सामाजिक गतिविधियों या मनोरंजक गतिविधियों को शामिल करने के लिए व्यक्तियों को नए मीडिया पर निर्भर करता है। यह निर्भरता दर्शाती है कि समुदायों के बीच संपर्क उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए नए मीडिया पर निर्भर करता है। हम हर दिन के साथ अपने दैनिक जीवन में उपकरणों और कंप्यूटरों के साथ काम कर रहे हैं। इंटरनेट हर एक के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता जा रहा है क्योंकि यह वर्तमान में सबसे नए और सबसे आगे दिखने वाले जन माध्यमों में से एक है। क्या इस नए जन माध्यम के बारे में सोचने की आवश्यकता है और यह अभिसरण जन माध्यम हमें कैसे प्रभावित करते हैं। इसका हमारे सामाजिक व्यवहार, हमारी संस्कृति और कई अन्य पर क्या प्रभाव पड़ता है। इस अभिसरण जन माध्यम ने हमारे जीवन, हमारी संस्कृति को बहुत हद तक बदल दिया है। इसमें तो कोई शक ही नहीं है। नए मीडिया पर निर्भरता पर विचार करें। हम कई कारणों से व्यक्तिगत या कार्यस्थल पर घर पर नए मीडिया का उपयोग करते हैं। जानकारी प्राप्त करने और दुनिया में राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर उनके बारे में जानने के लिए व्यक्तियों और समुदाय को नए मीडिया पर निर्भर किया जाएगा। व्यक्ति और समुदाय नए मीडिया के विभिन्न उद्देश्यों पर निर्भर करता है। यहां तक कि कुछ विशिष्ट सूचनाओं और विभिन्न सूचनाओं के लिए भी। नए मीडिया पर निर्भर रहने के लिए उनमें से कुछ चैटिंग में रुचि रखते हैं। शायद वे एक समुदाय के सदस्य होते हैं। ये समुदाय जानकारी का उत्पादन करते हैं और इस जानकारी का उपभोग करते हैं, जिससे नई संस्कृति का परिवर्तन होता है। ज्ञान, उत्पाद, तकनीक और विचार पैसे कमाने में सक्षम हैं। स्थिति में आने के लिए, नेता बनने के लिए, एक नया नवाचार पेश करने के लिए नया माध्यम प्रमुख भूमिका निभा रहा है। यह अनुभव और समस्याओं के समाधान का आदान-प्रदान करता है। यह सब कुछ नए मीडिया पर निर्भर करता है। नए मीडिया पर निर्भरता, चयनात्मक एक्सपोज़र, ऑनलाइन भागीदारी, उत्पाद की खरीद, सूचनाओं के आदान-प्रदान में भागीदारी और उनके आसपास की दुनिया और आर्थिक जानने के लिए विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोण और व्यवहार की भविष्यवाणी करने के लिए दिखाया गया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म को आवश्यक रूप से परस्पर सामाजिक प्रणालियों के स्थापित स्थूल ढांचे के साथ काम करते हुए देखा जाता है। नए मीडिया में अभी भी लोगों को असीमित निर्भरता संबंधों में रखा गया है जो उपभोक्ताओं पर विशेषाधिकार प्रदान करते हैं।

शोध प्रविधि

मीडिया निर्भरता का सिद्धांत पिछले कुछ दशकों में प्रौद्योगिकी ने वास्तव में जीवन में क्रांति ला दी है। शायद एक सबसे बड़ा परिवर्तन नए मीडिया संचार के साथ हुआ

है। औद्योगिक क्रांति से पहले समाज में बड़े पैमाने पर मीडिया का लगभग कोई नहीं था। हालांकि जैसे-जैसे जीवन बदलना शुरू हुआ, सभी पहलुओं में बड़े पैमाने पर संचार बढ़ने लगा। 20 वीं शताब्दी के भीतर प्रत्येक दशक के साथ संचार क्षेत्र के संबंध में बढ़त-ब्रेकिंग सिद्धांत प्रस्तुत किए गए थे। दो सिद्धांत जो इस क्षेत्र में एक आश्चर्यजनक रूप से सामने लाए, वे थे उपयोग और संतुष्टि दृष्टिकोण और निर्भरता सिद्धांत। इन सिद्धांतों ने वास्तव में जिस तरह से एक बड़े पैमाने पर संचार की विशेषता है, उसमें क्रांति की। जब कोई उपयोग और संतुष्टि दृष्टिकोण की पड़ताल करता है तो एक और सिद्धांत जो सामने आया था वह काफी प्रचलित है वह 'द डिपेंडेंसी थ्योरी। मेल्विन डीफ्लूअर और सैंड्रा बॉल-रोक्च ने पहली बार 1976 में निर्भरता सिद्धांत का वर्णन किया था। यह एक अर्थ में उपयोग और संतुष्टि के लिए एक विस्तार या इसके अलावा कुछ साल पहले लाया गया था। सिद्धांत संक्षेप में मीडिया सामग्री, समाज की प्रकृति और दर्शकों के व्यवहार के बीच परस्पर संबंध का स्पष्टीकरण है। मीडिया की शक्ति से प्रभावित होता है कि क्या मीडिया विशेष और व्यक्तिगत संगठन के लिए विशेष और महत्वपूर्ण संसाधन हैं।

निष्कर्ष

भारतीय ऑनलाइन समुदाय पर डिजिटल दुनिया और डिजिटल हिंदी के परिवर्तन को भलीभांति समझने का बहुत अच्छा मंच नवमीडिया है जो इसके निहितार्थ पर निर्भर करता है। व्यापक स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समाचारों और सूचनाओं के स्रोत के रूप में वेब की व्यक्तिपरक सूचना उपयोगिता द्वारा नए मीडिया निर्भरता की भविष्यवाणी की गई थी। नई पीढ़ियां अस्वाभाविक थीं, अधिक संभावना है कि वे नए मीडिया पर अधिक निर्भर रहें और ऑनलाइन अधिक समय व्यतीत करें। नई संस्कृति निर्भरता और संचार के नए रूपों के उपयोग के साथ सकारात्मक रूप से जुड़ी हुई थी। भारतीय अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण और उद्घाटन ने भारतीय समाज को नए सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंडों से परिचित कराया है। हालांकि, इस प्रक्रिया ने पारंपरिक भारतीय मूल्यों और मान्यताओं को नहीं मिटाया है। लेकिन विशेष रूप से युवाओं में देश की नई पीढ़ी दोनों दुनिया का सर्वश्रेष्ठ चाहती है। फेसबुक, ट्विटर और अन्य साइटों जैसे सामाजिक नेटवर्क सामाजिक संपर्क, संवाद, विनिमय और सहयोग के नए रूपों को चला रहे हैं। ये सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को अपने व्यापक हित को साझा करते हुए, अपडेट और टिप्पणियों को पोस्ट करने, या गतिविधियों और घटनाओं में भाग लेने के लिए विचारों को स्वैप करने में सक्षम बनाते हैं।

न्यू मीडिया निर्भरता उपयोगकर्ताओं को ऑनलाइन बहसों में तेजी से बहने वाली बातचीत में मदद करती है, व्यक्तियों, दोस्तों और सहकर्मियों को ऑनलाइन बहस में योगदान करने या दूसरों से एक नई संस्कृति भी सीखने में मदद करती है। एक नए जन माध्यम के रूप में इंटरनेट की सफलता के बाद से, यह समाज के लिए निहितार्थ की व्यापक चर्चा का विषय बन गया है। उनमें से कई को लगता है कि नए मीडिया के बहुत फायदे हैं और इंटरनेट को स्वतंत्रता, वाणिज्य, कनेक्टिविटी और विशेष रूप से संस्कृति के अन्य सामाजिक लाभों के लिए एक उपकरण मानते हैं। नए मीडिया निर्भरता के सामाजिक और सांस्कृतिक आकलन बहुत उपयोगी हैं क्योंकि यह नए मीडिया के डिजाइन, विनियमन और निर्भरता के लिए नीतियों का मार्गदर्शन कर सकता है।

संदर्भ सूची

1. जैन, प्रो. रमेश, सम्पादक, पृष्ट सज्जा और मुद्रण, मंगलदीप पब्लिकेशन्स,जयपुर,संस्करण 2003.

2. कुलश्रेष्ठ डॉ. विजय, संचार माध्यम तकनीक और लेखन, श्याम प्रकाशन,जयपुर संस्करण 2006.

3. डॉ. राधेशरण, भारत की सामाजिक एवं आर्थिक संचरना के मूल सिद्वांत.

4. कुलश्रेष्ठ डॉ.विजय, मुद्रित माध्यम तकनीक और लेखन, श्याम प्रकाशन जयपुर संस्करण 2006.

5. कुन्दरा डॉ.बलबीर,जनसंचार बदलते परिप्रेक्ष्य में, तक्षषिला प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण 2009.